अध्याय 3

संगीतज्ञों का योगदान एवं जीवनियाँ

तानसेन

जन्म : 1532 ई. मृत्यु : 1585 ई.

भारतीय संगीत के वांङ्मय में संगीत सम्राट तानसेन का अनन्य स्थान है। तानसेन का जन्म 1532 ई. में ग्वालियर के बेहट गांव में हुआ। अपनी विलक्षण सांगीतिक प्रतिभा से अकबर दरबार के नवरत्नों में आपको स्थान प्राप्त था। तानसेन का जन्म नाम ''तन्ना मिश्र'' था। आपके पिता का नाम मकरंद पाण्डे अथवा मुकुंदराम पाण्डे था। आपकी माता एवं पिता दोनों ही ईश्वर भक्त सात्विक एवं कुलीन ब्राह्मण थे। लम्बे समय तक निःसंतान रहने से आपके माता–पिता ने शिव की अनन्य भक्ति की । कहा जाता है कि मोहम्मद गौस नामक सिद्ध पुरुष के आशीर्वाद से ही उन्हें पुत्र रत्न के रूप में तानसेन प्राप्त हुए। बालक तन्ना मिश्र बचपन से ही अद्वितीय सांगीतिक प्रतिभा के धनी थे। बचपन में तानसेन पशु–पक्षी, जानवर की आवाज़ हूबहू अपने कंठ से निकाल कर लोगों को चमत्कृत कर देते थे। आपकी इस प्रतिभा से प्रभावित होकर वृंदावन के महान् संगीतज्ञ सन्यासी स्वामी हरिदास जी ने आपको अपना शिष्य बना लिया। स्वामी हरिदास की संगीत शिक्षा से बालक तन्ना मिश्र मात्र 10 वर्ष की आयु में ही धुरन्धर संगीतज्ञ बन गये। उनकी संगीत प्रतिभा की कीर्ति चारों ओर फैलने लगी। बालक तन्ना मिश्र ''तानसेन'' के नाम से प्रसिद्ध हो गये। वृन्दावन में स्वामी हरिदास से संगीत शिक्षा लेकर तानसेन पुनः ग्वालियर आ गये। ग्वालियर में संगीत प्रेमी गुर्जरी रानी मृगनयनी ने तानसेन का विवाह ''हुसैनी'' नामक कन्या से करवा दिया। तानसेन के चार पुत्र और एक पुत्री थी।

सूरतसेन, तरंगसेन शरतसेन और विलास खाँ तानसेन के चारों पुत्र संगीत कला के संस्कार लेकर ही पैदा हुए और आगे चलकर इन्होंने महान् संगीत परम्पराओं को जन्म दिया।

तानसेन की संगीत प्रतिभा को देख सर्वप्रथम रीवा नरेश रामचन्द्र इन्हें अपने दरबार में ले गये और तानसेन रूपी संगीत रत्न को मुगल सम्राट अकबर को भेंट किया। कला पारखी अकबर ने इन्हें अपने दरबार के नौ रत्नों में स्थान दिया। तानसेन ने रीवा नरेश राजा रामचन्द्र बाघेला और सम्राट अकबर की प्रसंज्ञा में अनेक

ध्रुपदों की रचना की। उदाहरण –

राग – परज – चौताल

जाके दान थरथराट मेदिनी
ऐसो वीरभान को नंदन
राजा राम बाधेला वीर
जाके चढ़त सेस कमल
ऐसे प्रचण्ड बलबीर

(ध्रुपद और उसका विकास, आचार्य बृहस्पति)

तानसेन द्वारा रचित सम्राट अकबर की प्रशंसा में लिखा गया ध्रुपद –

धनी धनी धरती धर साही अकबर
जाको जगत में चली दुआई

(ध्रुपद और उसका विकास, आचार्य बृहस्पति)

तानसेन ध्रुपद की गोबरहार वाणी के प्रणेता थे। उन्हें गोबरहारी ध्रुपदिया भी कहा जाता था। कृष्णानंद व्यासकृत राग कल्पद्रुम (1889) में तानसेन की ध्रुपद रचनाएँ संग्रहित है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत की अनमोल धरोहर है। प. भातखण्डे जी ने स्वरलिपि में बांधकर इन्हें सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

तानसेन की वंश परम्परा ने ध्रुपद के साथ ही उच्च कोटि के बीनकार भी दिये हैं, ध्रुपद अंग के वीणा वादक एवं सुरबहार वाद्य की रचना करने का श्रेय तानसेन की वंश परम्परा को ही है। सितार का सेनिया घराना तानसेन के वंशजों की देन है। तानसेन द्वारा कई रागों की रचना भी की गयी । जैसे – मियाँ की मल्हार, मियाँ की सारंग, मियाँ की तोड़ी, दरबारी कान्हड़ा आदि ।

तानसेन द्वारा लिखे गये भक्ति और स्तुति के पद संगीत की धरोहर है। उन्होंने गणेश स्तुति, विष्णु स्तुति, शिव स्तुति , सरस्वती स्तुति, देव स्तुति, अल्लाह नाम (शेख सलीम) आदि के पद सृजित किये जो राग–यमनी बिलावल, मालकौंस, सूहा, मुल्तानी, हिंडौल आदि अनेकों रागों में निबद्ध है। तानसेन ने ऋतुवर्णन, होरी के पद, नायिका भेद पर भी अनेकों पद लिखे जिनका उल्लेख रागमाला और संगीतसार में मिलता है। उन्हें अनेक राग–रागिनियों में सिद्धि प्राप्त थी। सुरों के सच्चे साधक तानसेन के जीवन में पानी बरसाने, जंगली पशुओं को वशीभूत करने, रोगियों को ठीक करने जैसी अनेक चमत्कारी घटनाएँ हुई। कहा जाता है कि षड़यंत्रपूर्वक तानसेन से "दीपक" राग गाने की फरमाईश कर दरबारियों ने उन्हें झुलसा दिया था। तानसेन की मृत्यु 1585 में दिल्ली में हुई। झिलमिल नाथ टेम्पल "बेहट" में स्थित तानसेन स्मारक एवं तानसेन आराधना स्थल आज भी इस महान संगीतज्ञ की प्रतिभा के मूक साक्षी है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- तानसेन ध्रुपद की गोबहर वाणी के प्रणेता थे।
- तानसेन को सम्राट अकबर के नवरत्नों में स्थान प्राप्त था।
- तानसेन की वंश परंपरा में ध्रुपद गायन और वीणा वादन दोनों परंपराऐं चलती रही।
- कृष्णानंद व्यास कृत 'राग कल्पद्रुम' पुस्तक में तानसेन की ध्रुपद रचनाओं का संग्रह है।
- तानसेन समारोह प्रतिवर्ष ग्वालियर में आयोजित होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) तानसेन का जन्म कहाँ हुआ था ?

(2) तानसेन द्वारा रचित किन्हीं दो रागों के नाम लिखिये ?

(3) तानसेन ध्रुपद की किस वाणी के प्रवर्त्तक थे ?

(4) तानसेन की वंश परंपरा में कौनसा वाद्य बजाया गया ?

(5) तानसेन के संगीत गुरु कौन थे ?

निबंधात्मक प्रश्न

(1) तानसेन के सांगीतिक योगदान पर निबंध लिखिये ?

(2) तानसेन के सम्पूर्ण जीवनवृत्त पर निबंध लिखिये ?

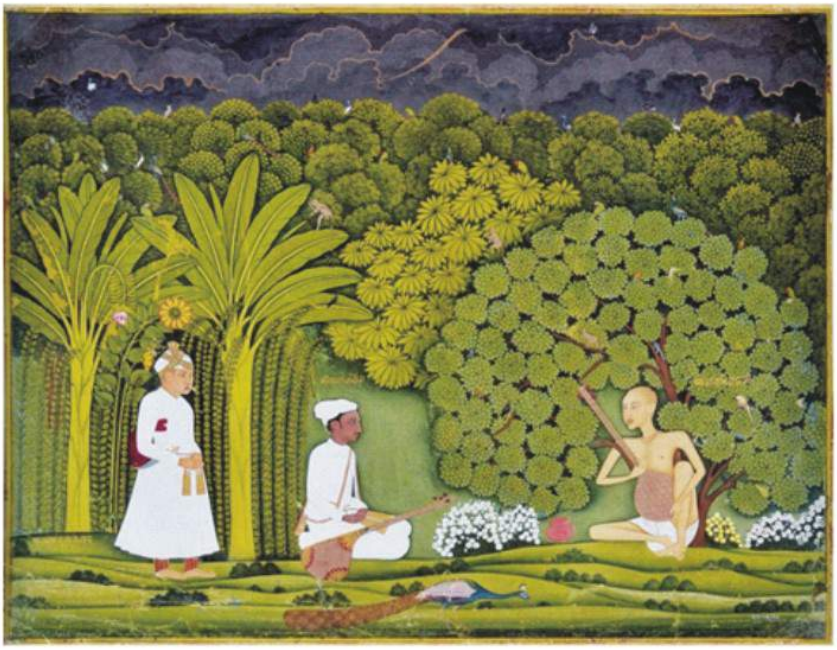

सम्राट अकबर, तानसेन एवं स्वामी हरिदास (तानसेन के गुरु)

भैरो सुर सरिता बहे कोल्हू चले जु धाय।
मालकौंस जो गाइये, पाहन पिघली पहाय।।
चलत हिंडेलो आपतैं, सुनत राग हिंडोल।
बरसे जल–धन–धार अति मेघ राग के बोल।।
श्री राग के सुर सुनत सूखो वृक्ष हराय।
दीपक दीयो बरि उठे, जो कोई जाने गाय।।
– तानसेन कृत गणेश स्तुति से
6 पुरुष रागों के प्रभाव का तानसेन द्वारा उल्लेख

विष्णु नारायण भातखंडे

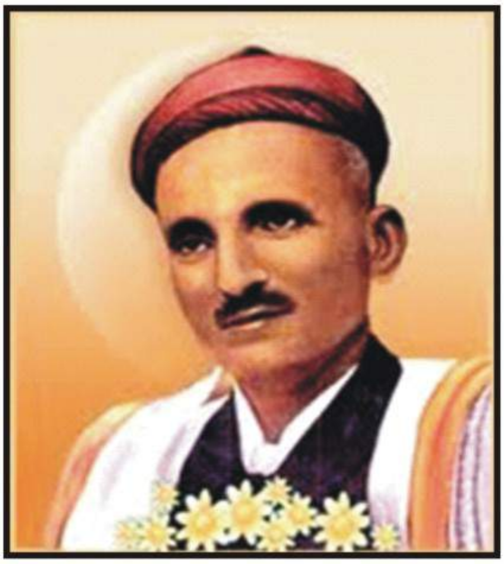

जन्म	:	10 अगस्त 1860, बालकेश्वर, महाराष्ट्र
मृत्यु	:	19 सितंबर 1936, गणेश चतुर्थी के दिन, पक्षाघात से
संगीत क्षेत्र	:	उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के संस्थापक, भारतीय शास्त्रीय संगीत के पुनरूद्धारक, संगीत शास्त्री व शास्त्रीय गायक
गायन विधा	:	खयाल गायक
उपनाम	:	चतुरपंडित, विष्णु शर्मा,मंजरीकार
शिक्षा	:	कानून में स्नातक, वीणा, सितार, बाँसुरी व शास्त्रीय गायन की शिक्षा
गुरू	:	उ. वजीर खान, मौहम्मद अली(हररंग),मौहम्मद हुसैन(आगरा), रावजी बुआ

महत्त्वपूर्ण कार्य

- प्राचीन व मध्यकालीन ग्रंथों के गहन अध्ययन के पश्चात् भारतीय संगीत जो मौखिक परंपरा पर अधिक आश्रित था, उसे एक व्यवस्थित सूत्र में बांधने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।
- घरानों में जकड़ी संगीत व्यवस्था से अत्यंत कष्ट पाकर बंदिशें प्राप्त कीं।
- विश्वविद्यालय व विद्यालयों की स्थापना तथा पाठ्यक्रमों का निर्माण।
- 5 अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों का आयोजन किया।
- रागों की स्वर मालिका व लक्षण गीतों की रचना, स्वरलिपि पद्धति का निर्माण ।
- दस थाट पद्धति का निर्माण व महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना।

ग्रंथों की रचना

श्री मल्ल लक्ष्य संगीत, लक्षण गीत संग्रह भाग 1–3, हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति शास्त्र भाग 1–4, क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1–6, हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ इंडियन म्युजिक तथा मध्यकालीन प्रमुख संगीत ग्रंथों की सरल व्याख्या आदि ।

शिक्षण संस्थाओं की स्थापना

माधव संगीत विद्यालय, ग्वालियर (1916), मैरिस म्युजिक कॉलेज (वर्तमान नाम 'भातखंडे संगीत विद्यापीठ, लखनऊ) 1926,

शिष्य

पं. एस. एन. रातंजनकर, दिलिप कुमार राय व एक विशाल शिष्य परंपरा ।

पं. भातखंडे एक युग पुरुष थे। भारतीय संगीत के पुनरूद्धार का महत्त्वपूर्ण कार्य इन्होंने किया तथा संगीत को सर्वत्र सुलभ बनाया। अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों का आयोजन कर संगीत के शास्त्रीय क्रियात्मक पक्षों में विचार विमर्श कर एकरूपता स्थापित की। भारत सरकार ने इनके महत्त्वपूर्ण योगदान पर 1961 में डाक टिकट जारी किया।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- पं. विष्णु नारायण भातखंडे ने घरानेदार महत्त्वपूर्ण बंदिशों को लिपिबद्ध संगृहित कर भारतीय शास्त्रीय संगीत को समृद्ध किया।
- पं. विष्णु नारायण भातखंडे का उपनाम 'चतुर पंडित' था।
- पं. विष्णु नारायण भातखंडे उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के सिद्धांतों को संस्थापित करने वाले महान विद्वान थे।
- माधव संगीत महाविद्यालय की ग्वालियर में स्थापना पं. विष्णु नारायण भातखंडे ने की थी।
- पं. विष्णु नारायण भातखंडे ने अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों का आयोजन कर हिन्दुस्तानी संगीत को व्यापक एवं सुदृढ़ आधार प्रदान किया।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में प्रचलित 10 थाटों के सिद्धांत के प्रवर्तक कौन थे ?

(2) मैरिस म्यूजिक कॉलेज की स्थापना किसने की थी ?

(3) भातखंडे जी द्वारा लिखे गये ग्रंथों के नाम लिखिये ?

(4) भातखंडे जी ने कितने अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों का आयोजन करवाया ?

(5) भातखंडे जी द्वारा लिपिबद्ध बंदिशों का संग्रह किस पुस्तक में मिलता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

(1) ''पं. विष्णु नारायण भातखंडे हिन्दुस्तानी संगीत के पुनरूद्धारक थे।'' कथन की विस्तृत विवेचना कीजिये।

(2) पं. विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा संगीत जगत को दिये गये योगदान पर निबंध लिखिये ?

विष्णु दिगंबर पलुस्कर

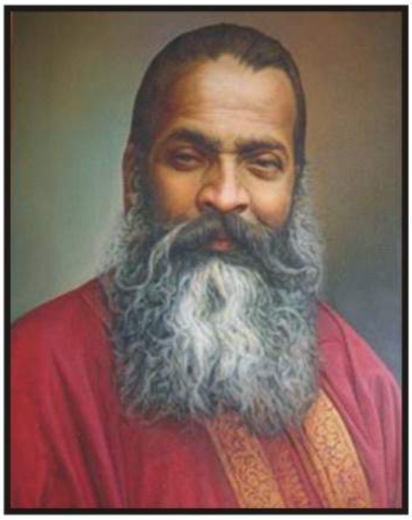

जन्म : 18 अगस्त 1872, कुंदवाड़, महाराष्ट्र

मृत्यु : 21 अगस्त 1931, मिरज, महाराष्ट्र

संगीत क्षेत्र : भारतीय शास्त्रीय गायन

गायन विधा : खयाल गायन (संत संगीतज्ञ)

घराना : ग्वालियर घराना

गुरु : बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर (खयाल गायन), चंदन चौबे (ध्रुपद शिक्षा)

महत्त्वपूर्ण कार्य

– 'रघुपति राघव राजाराम' की स्वर रचना के निर्माता थे।

– उच्च कोटि के गायक, संगीत शिक्षक व संगीत के शास्त्रीय व क्रियात्मक दोनों पक्षों के महत्त्वपूर्ण सुधारक थे।

– संगीत को आमजन में सम्मानजनक स्थान दिलाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

– स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया।

– राष्ट्र को शिष्यों के रूप में महान कलाकारों की एक विशाल श्रृंखला प्रदान की।

पुस्तक लेखन

संगीत बाल बोध भाग 1–3, स्वल्पालापगायन, संगीत तत्व दर्शक राग प्रवेश, भजन

शिक्षण संस्था

गांधर्व महाविद्यालय 1901 में स्थापित किया। आज देशभर में इसकी विभिन्न शाखाऐं हैं।

प्रमुख शिष्य

पं. विनायक राव पटवर्द्धन, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. नारायणराव व्यास, बी. आर. देवधर, दत्तात्रेय विष्णु पलुस्कर (पुत्र), नारायण मोरेश्वर खरे ।

भारतीय संगीत के पुनरूद्धार कार्य में पं. विष्णु नारायण भातखंडे व पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। इन्हें 'विष्णुद्वय' भी कहते हैं। कठोर साधना, गुरु भक्ति व नियंत्रण में संगीत शिक्षा प्राप्त की। संगीत के क्रियात्मक व शास्त्रीय दोनों पक्षों को समृद्ध किया। बाल्यकाल में एक दुर्घटना के फलस्वरूप दोनों आँखों की दृष्टि क्षीण हो गई, परिवार में अनेकों कष्ट थे तथा 11 पुत्रों की असमय मृत्यु हो गई इसके उपरांत भी राष्ट्र को शास्त्रीय संगीत से समृद्ध कर गए। 1973 में भारत सरकार ने इनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ग्वालियर घराने से संबंधित थे।
- 'रघुपति राघव राजा राम ' की स्वर रचना पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने की थी।
- पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर संगीत के प्रयोग पक्ष व शास्त्र पक्ष दोनों के सुधारक थे।
- पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने गांधर्व महाविद्यालय की स्थापना की थी।
- शास्त्रीय संगीत की महत्त्वपूर्ण बंदिशों को सुरक्षित रखने हेतु स्वरलिपि निर्माण का कार्य पं. पलुस्कर द्वारा किया गया।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का जन्म कहाँ हुआ ?

(2) पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के गुरु का नाम क्या था ?

(3) पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर किस घराने से संबंधित थे ?

(4) 'रघुपति राघव राजाराम' की स्वर रचना किसने की थी ?

(5) गंधर्व महाविद्यालय के संस्थापक कौन थे ?

निबंधात्मक प्रश्न

(1) भारतीय संगीत के विकास में पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के योगदान को विस्तृत रूप से समझाईये ?

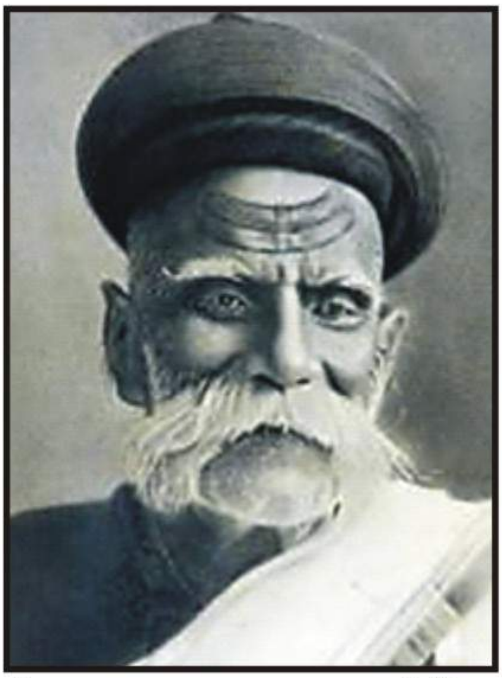

पं. बाल कृष्ण बुआ इचलकरंजीकर
पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के गुरु

पण्डित भीमसेन जोशी

जन्म : 04 फरवरी 1922, धारवाड़ कर्नाटक ।

मृत्यु : 24 जनवरी 2011, पुणे, महाराष्ट्र ।

संगीत क्षेत्र : भारतीय शास्त्रीय गायन ।

गायन विधा : खयाल, भजन, अभंग (कन्नड, मराठी व हिन्दी) व ठुमरी गायन ।

घराना : किराना घराना

गुरू : प्रारंभिक शिक्षा – चुनप्पा, श्यामाचार्य जोशी, उ. हाफिज अली खाँ से तत्पश्चात् पं. सवाई गंधर्व ।

पार्श्वगायन : बसंत बहार, तानसेन, आँखें तथा कन्नड व मराठी फिल्मों में गायन किया। श्रेष्ठ गायक का फिल्मफेयर अवार्ड प्राप्त किया ।

विशेष कार्य

– एच एम वी ने अनेक एल पी रिकॉर्ड बनाए, अनेक कैसेट, सी.डी. व रिकॉर्डिंग तैयार की।
– गायन में दमदार आवाज, सांस पर चमत्कारिक नियंत्रण, अद्‌भुत तानों का प्रवाह, छोटी–छोटी सुंदर भरावट, शुद्ध रागदारी।
– मिले सुर मेरा तुम्हारा (1988), जन–गण–मन (2000) वीडियो की प्रसिद्धि ।
– भारतीय शास्त्रीय संगीत को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की।
– उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय संगीत की जुगलबंदी का प्रयोगात्मक कार्य किया।

शिष्य

श्रीकांत देशपांडे, नारायण देशपांडे, माधव गुड़ी, आनंद भाटे, श्रीनिवास जोशी आदि प्रमुख शिष्य हैं।

सम्मान व पुरस्कार

– पद्‌मश्री (1972), संगीत नाटक अकादमी अवार्ड (1976), पद्‌म भूषण (1985), पद्‌म विभूषण (1999), महाराष्ट्र भूषण (2002), कर्नाटक रत्न (2005), भारत रत्न (2008), इनके अलावा अनेक प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए।

पं. भीमसेन जोशी ने भारतीय संगीत को नई ऊँचाईयाँ प्रदान की हैं। मात्र 11 वर्ष की उम्र में अब्दुल करीम खाँ की ठुमरी – 'पिया बिन नहीं आवत चैन' सुनकर संगीत शिक्षा हेतु घर छोड़ दिया। अनेक स्थानों पर भटकने व गुरुओं से जो भी मिला, प्राप्त करते हुए पं. सवाई गंधर्व के शिष्य बने। दरबारी, तोड़ी, रामकली, मल्हार, पूरिया कल्याण आदि रागे खूब प्रसारित हुईं। गुरु की स्मृति में 1953 से पूना में 'सवाई गंधर्व संगीत समारोह' का आयोजन किया जाता है जो आज भारत का महत्त्वपूर्ण संगीत समारोह बन चुका है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- पं. भीमसेन जोशी किराना घराने के मूर्धन्य गायक थे।
- पं. भीमसेन जोशी के गुरु की स्मृति में आज भी ''सवाई गंधर्व समारोह'' का आयोजन पूना में किया जाता है।
- पं. भीमसेन जोशी ने उत्तर और दक्षिण भारतीय संगीत की जुगलबंदी का प्रयोगात्मक कार्य किया।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) पं. भीमसेन जोशी का जन्म कहाँ हुआ ?

(2) पं. भीमसेन जोशी द्वारा ख्याल विधा के अतिरिक्त संगीत की कौन–कौन सी विधाऐं गायी गयी ?

(3) सवाई गंधर्व समारोह प्रतिवर्ष कहाँ आयोजित होता है ?

(4) पं. भीमसेन जोशी ने किन दो संगीत पद्धतियों की जुगलबंदी का काम किया ?

निबंधात्मक प्रश्न

(1) ''पं. भीमसेन जोशी का भारतीय शास्त्रीय संगीत में योगदान'' विषय पर लेख लिखिये ?

(2) पं. भीमसेन जोशी के सम्पूर्ण जीवनवृत्त को उजागर कीजिये ?

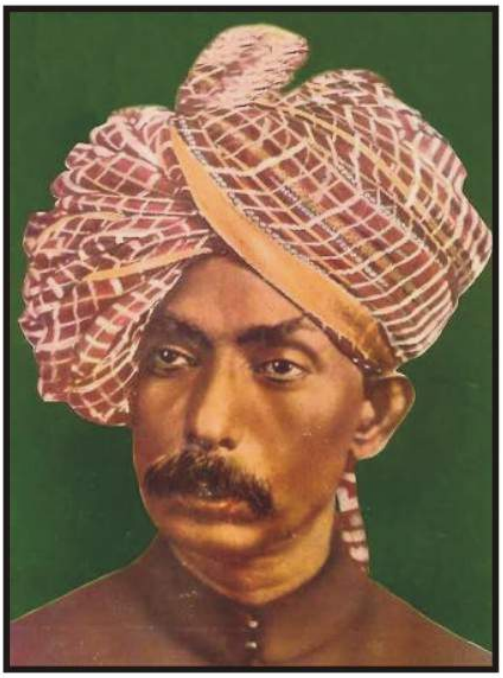

उ. अब्दुल करीम खां
किराना घराने के स्तंभ

पं. रामभाउ कुन्दगोलकर सवाई गंधर्व
भीमसेन जोशी के गुरु

किशोरी अमोनकर

जन्म : 10 अप्रैल 1932

संगीत क्षेत्र : उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन (भजन, ठुमरी व पार्श्वगायन से भी प्रसिद्धि)

गायन विधा : खयाल गायन शैली

घराना : जयपुर घराना –अल्लादिया खाँ

गुरू : मुख्य शिक्षा अपनी माता व प्रख्यात गायिका मोघू बाई कुर्डीकर से प्राप्त की तथा अंजनि बाई मालपेकर (भिंडी बाजार घराना), डॉ. अनवर हुसैन खाँ (आगरा घराना) से ।

वर्तमान निवास : मुंबई, महाराष्ट्र में ।

विशेष कार्य

– शास्त्रीय बंदिशें तथा उप शास्त्रीय गीतों की अनेकों रचनाऐं की है

– गायन शैली में मूलतः जयपुर घराने की विशेषताऐं रखते हुए, अन्य घरानों का मिश्रण कर प्रयोगात्मक संगीत की प्रस्तुति देती हैं।

– शास्त्रीय गायन को भाव व रस का सृजनात्मक प्रयोग ।

– संगीत, रस व भाव विषय की अद्‌भुत व कुशल वक्ता ।

शिष्य परंपरा

आरती अंकलेकर, देवकी पंडित, मीरां वंशीकर, सुहासिनी मुलगांवकर, मानिक भिड़े, रघुनंदन वंशीकर, तेजश्री अमोनकर (पौत्री) ।

किशोरी जी, वर्तमान में देश की ख्यातनाम शास्त्रीय गायिका हैं तथा जयपुर घराने की प्रतिनिधि कलाकार है लेकिन भाव व रस निष्पत्ति हेतु गायन में विविध प्रयोगों के कारण चर्चा में रहीं हैं। परंपरा व प्रयोग का समन्वय इनकी गायकी में दिखाई देता रहा है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- किशोरी अमोनकर जयपुर घराने की सुप्रसिद्ध ख्याल गायिका है।
- किशोरी अमोनकर ने जयपुर घराने की ख्याल गायकी में प्रयोगधर्मिता का समावेश किया।
- परंपरा और प्रयोग का समन्वय इनकी गायकी की विशेषता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) किशोरी अमोनकर किस गायन शैली की कलाकार हैं ?

(2) किशोरी अमोनकर का 'घराना' कौनसा है ?

(3) किशोरी अमोनकर की माता का क्या नाम है ?

(4) किशोरी अमोनकर के किन्हीं दो शिष्यों के नाम लिखिये ?

(5) किशोरी अमोनकर का वर्तमान निवास कहाँ है ?

निबंधात्मक प्रश्न

(1) किशोरी अमोनकर के भारतीय संगीत में योगदान पर निबंध लिखिये ?

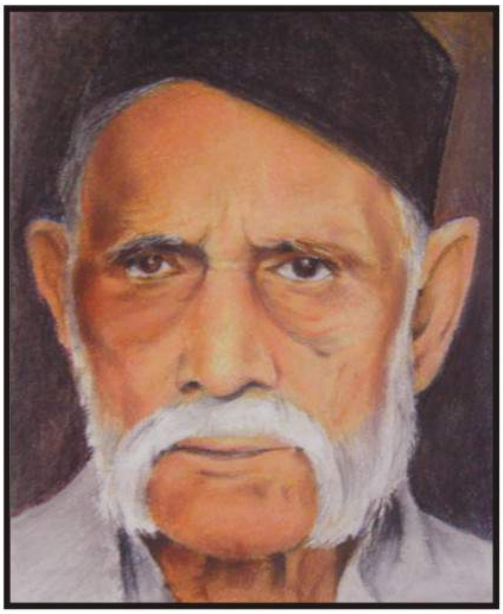

उ. अल्लादिया खान
जयपुर घराने के आधार स्तम्भ

मोगू बाई कुर्डीकर
किशोरी अमोनकर की मां एवं गुरु

समाधि अवस्था में जाने क सरल–सुरीला व अत्यंत यौगिक मार्ग, भारतीय राग आधारित संगीत है।
– पं. जितेन्द्र अभिषेकी